B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : Ashoka's Policy of Dhamma

Prepared by : Sri Pinku kumar
Asst. Professor (Dept. of History)
B.N. College Bhagalpur
Contact (whatsApp) no- 7982166260
Email id- kpinku348@gmail.com

अशोक की धम्म की नीति

- अपनी प्रजा के नैतिक उत्थान के लिये मौर्य सम्राट अशोक ने जिन आचार संहिता को प्रस्तुत किया उसे ही उसके अभिलेखों में धम्म कहा गया है।

- धम्म संस्कृत के धर्म का ही प्राकृत रूपांतर है, परंतु अशोक के लिए इस शब्द का विशेष महत्त्व है। वस्तुतः अशोक का धम्म नीति ही उसे विश्व इतिहास में महान बनाता है।

पृष्ठभूमि

- धम्म के मूल तत्वों एवं उसकी प्रकृति को जानने से पूर्व यह जानना वांछिनीय होगा कि आखिर किन कारणों से धम्म की नीति सामने आई। धम्म को प्रभावित करने वाले कारक-

उदार वातावरण की विरासत

- यद्यपि अशोक बौद्ध धर्म का अनुयाई था और बौद्ध धर्म उसका व्यक्तिगत धर्म था लेकिन जनसाधारण के लिए उसने जिस धर्म का प्रचार किया वह बौद्ध धर्म से भिन्न था।
- अशोक जिस वातावरण में रहा था उसने उसे स्वतंत्र रूप से विचार करने की शक्ति दी।
- मौर्य साम्राज्य की स्थापना के साथ ही मौर्य शासकों का विदेशियों से घनिष्ठ संबंध कायम हुआ।
- यह प्रक्रिया चंद्रगुप्त मौर्य से अशोक तक चलती रही। इससे मौर्य शासकों की मानसिकता कट्टरपंथी और रूढ़िवादी नहीं रह गयी।

पृष्ठभूमि-1

- चंद्रगुप्त, बिंदुसार, अशोक सभी धार्मिक मामलों में गहरी रूचि लेते थे परंतु उन्होंने अपने धार्मिक विश्वासों को जनता पर थोपने का प्रयास कभी नहीं किया।
- अशोक ने तो धम्म के रूप में एक ऐसा आदर्श जनता के सामने रखा जिसे वह सहर्ष और आसानी से ग्रहण कर अपना नैतिक उत्थान कर सके।

अशोककालीन परिस्थितियां

सामाजिक पहलू - धम्म की नीति कार्यान्वित करने के पीछे कुछ अन्य कारण भी थे। एक तरफ नए धर्म बौद्ध एवं जैन का प्रभाव बढ़ता जा रहा था तो दूसरी तरफ वैदिक या ब्राह्मण धर्म में सुधार लाकर इसे सर्वगाह्य बनाने का प्रयास हो रहा था।

सामाजिक – आर्थिक पहलू

- ऐसी स्थिति में सामाजिक वातावरण अशांत था। नए और पुराने धर्मों के बीच टकराव की संभावना से बचने के लिए तथा सामाजिक एकता को बनाए रखने के लिए दोनों धर्मों के बीच का मार्ग निकालकर जनता के कल्याण के लिए अशोक ने अपना नया धर्म आरंभ किया।

आर्थिक पहलू

- 600 BC से शुरू हुए आर्थिक प्रगति इस काल में अपने शिखर पर पहुंच गई, फलस्वरूप कई तरह की सामाजिक-आर्थिक जटिलताएं उत्पन्न हुई।
- इन सारी समस्याओं के बीच समन्वय स्थापित करने की चुनौती अशोक के सामने थी और अशोक ने धम्म के रूप में इस चुनौती का समाधान प्रस्तुत किया।

धम्म शासकीय आवश्यकताओं से प्रेरित

- रोमिला थापर जैसे इतिहासकारों का विचार है कि अशोक ने राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित होकर नया धम्म की कल्पना की तथा इसका प्रसार किया।
- अशोक के समय तक मौर्य सम्राट जितना विशाल और सुदृढ़ हो चुका था, उसकी सुरक्षा के केवल दो ही उपाय थे। पहला सैन्य बल और दूसरा धार्मिक एकता।
- पहली व्यवस्था में एक कठिनाई यह थी कि ऐसा तभी संभव था जब शासक योग्य और शक्तिशाली हो। कमजोर और अयोग्य शासक साम्राज्य की सुरक्षा केवल सेना के बल पर नहीं कर सकते थे।

धम्म शासकीय आवश्यकताओं से प्रेरित-1

- सामाज्य की सुरक्षा का दूसरा उपाय था, सभी धर्मों को संकलित सारग्रहित धर्म को अपनाना। दूसरा तरीका ज्यादा सुगम और लाभदायक था।
- अशोक ने सैनिक शक्ति के बदले धर्म के आधार पर साम्राज्य में रहने वाले सभी वर्गों, समुदायों, राजनीतिक इकाइयों को संगठित कर एक सूत्र में बांधकर मौर्य साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान करने का प्रयास किया।
- अशोक का धम्म राजनीति से प्रेरित था और बाद में मुगल सम्राट अकबर ने भी दीने-इलाही के माध्यम से यही करने का प्रयास किया। हालाँकि कुछ आधुनिक विद्वान रोमिला थापर के विचार से सहमत नहीं हैं।

धम्म के मूल तत्व

- धम्म के मूल तत्वों को जानने का सर्वाधिक उपयुक्त स्रोत तो अशोक के अभिलेख ही हैं।
- अपने दूसरे स्तंभ-लेख में अशोक स्वयं प्रश्न करता है – धम्म क्या है?
- अपने दूसरे तथा सातवें शिलालेख के माध्यम से वह इसका उत्तर भी देता है- धम्म का तात्पर्य है कम पाप करना, कल्याण करना, दया व दान करना, सत्य बोलना, पवित्रता से रहना, स्वभाव में मधुरता तथा साधुता बनाए रखना आदि।
- तीसरे शिलालेख में अशोक ने ‘अल्प व्यय एवं अल्पसंग्रह’

को धम्म का अंग माना। सातवें व बारहवें शिलालेख में सभी धर्मों के प्रति आदर करने की बात कही गयी है। इस प्रकार 13वें शिलालेख में भेरी घोष (युद्ध) के स्थान पर धम्म घोष की बात कही गयी है।

धम्म के मूल तत्व-1

- इस प्रकार धम्म के मूल तत्व हैं- अहिंसा, सत्य, मानवीय व्यवहार, शिष्टाचार, सहनशीलता, सहिष्णुता, सामाजिक दायित्व बोध, सभी के प्रति आदर एवं सम्मान व प्रेम।
- यह सभी तत्व धम्म के विधयात्मक (सकारात्मक) पक्ष के अंतर्गत आते हैं।
- धम्म का एक निषेधात्मक पक्ष है जिसके तहत कुछ दुर्गुणों की चर्चा की गई है जिसे अशोक ने तीसरे स्तंभ लेख में पाप कहा है।
- यह है प्रचंडता, निष्ठुरता, क्रोध, घमंड व ईर्ष्या। ये पाप या दुर्गुण धम्म की प्रगति को रोकता है अतः मनुष्य को इन दुर्गुणों से दूर रख के ही धम्म का पालन कर सकता है।

धम्म के प्रचार-प्रसार का साधन - धम्म के प्रचार-प्रसार के लिए अशोक ने धम्म महामात्रों की नियुक्ति की जिसका उल्लेख पांचवें शिलालेख में है। आठवें शिलालेख में उसने धम्म यात्रा पर बल दिया। कुछ व्यक्तिगत कार्यों से भी धम्म का प्रचार किया जैसे पशुवध निषेध, अहिंसा की नीति का पालन, आखेट यात्रा बंद करना, विदेश में धर्मदूत भेजना आदि।

धम्म का स्वरुप /प्रकृति

- **सामाजिक आचार संहिता के रूप में-** धम्म सामाजिक आचार संहिता के रूप में था, जिसके तहत इस बात पर बल दिया गया कि एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के प्रति क्या व्यवहार हो। इसके माध्यम से सामाजिक समन्वय एवं सहअस्तित्व की स्थापना का प्रयास किया गया।
- **धर्मनिरपेक्ष स्वरूप-** अशोक का धम्म कर्मकांडी, रूढ़िवादी तथा तमाम धार्मिक जटिलताओं से मुक्त था। धम्म सभी धर्म और संप्रदाय के लोगों के लिए ग्राह्य था। धम्म को स्वीकार करने हेतु किसी भी प्रकार के विधि-विधान तथा बंधन आरोपित नहीं थे।
- **लोक कल्याणकारी स्वरूप-** व्यक्ति के नैतिक उत्थान एवं कल्याण हेतु धम्म का प्रतिपादन किया गया। मुफ्त

चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना, वृक्षारोपण पर बल, गरीब

के प्रति दया का भाव आदि इसमें शामिल है।

- **सार्वभौमिक व साश्वत संकल्पना-** धम्म किसी एक वर्ग या जाति को लक्षित कर नहीं लाया गया और न ही यह काल विशेष के लिए था। यह तो सभी जातियों, वर्गों, सभी जीवों, सभी संस्कृतियों एवं सभी कालों के लिए अपना महत्व रखता है।

धम्म का स्वरुप /प्रकृति

- **मानवीय स्वरूप-** धम्म का एक मानवीय स्वरूप भी उभरता है धर्म के तहत दास एवं भृत्यों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखना, हिंसा को नकारा जाना, पशुओं के प्रति दया का भाव आदि इनके मानवीय स्वरूप को स्पष्ट करते हैं। इसे मानवतावादी मूल्यों व प्रजातांत्रिक आदर्शों को स्थापित करने के सूत्र के रूप में देखा जा सकता है।
- **प्रगतिशील स्वरूप-** वस्तुत: धाम के दो रूप हैं- बाह्य तथा आंतरिक रूप
- **बाह्य रूप-** इसमें उन गुणों पर बल दिया गया है जिससे समाज का नैतिक उत्थान हो और इसके लिए लोक कल्याणकारी कार्यों पर बल दिया- कुआं खुदवाना, बाग लगवाना सराय बनवाना आदि।
- **आंतरिक रूप-** इसके तहत व्यक्तिगत आत्मोन्नति पर बल दिया जिसमें आत्मसंयम एवं दूसरे के प्रति सहिष्णुता पर बल दिया गया। मनुष्य को अपने मन से हिंसा, क्रूरता, क्रोध, अहंकार एवं ईर्ष्या को निकाल देना जरूरी है तभी वह धम्म के बाह्य रूप को अपना सकता है।

धम्म का प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव -

- वस्तुत: धम्म का मुख्य उद्देश्य सामाजिक समन्वय स्थापित करना, राजनीतिक एकता लाना एवं लोगों का नैतिक उत्थान करना था। धम्म अपने इस उद्देश्य को पूरा करने में पूर्ण रूप से सफल नहीं रहा क्योंकि सामाजिक तनाव बने रहे एवं राजनीतिक एकता कायम नहीं की जा सकी लेकिन तात्कालिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो जब इसे लागू किया गया तब इसका विशेष महत्व था।
- यह एक नई तरीके की सामाजिक, राजनीतिक अवधारणा थी और इस अवधारणा के तहत अशोक ने अपने काल में अपने साम्राज्य की सुरक्षा कायम रखी और उसकी सीमाओं को अक्षुण्ण बनाए रखा तथा विदेशों से मैत्रीपूर्ण संबंध कायम रहे।

धम्म का प्रभाव

- सामाजिक समन्वय एवं राजनीतिक एकीकरण हेतु अशोक ने जो प्रयास किए वह प्रशंसनीय है क्योंकि इसके पहले इस तरह का प्रयास किसी अन्य शासक ने नहीं किया। धम्म की सफलता इस बात में निहित है कि इसके मूल तत्वों की प्रासंगिकता वर्तमान में भी कायम है।

नकारात्मक प्रभाव

- धम्ममहामात्र जैसे अधिकारियों के माध्यम से लोगों के निजी जीवन में हस्तक्षेप।
- प्रचार-प्रसार के लिए अत्यधिक धन का व्यय, राजकोषीय स्थिति प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई।
- सभी समस्याओं का समाधान धम्म के माध्यम से ढूंढने का प्रयास।
- धम्म नीति को समझना योग्य शासकों के लिए तो संभव था परंतु अयोग्य शासकों के लिए इस नीति की व्यापकता को समझना कठिन रहा, फलतः उत्तरवर्ती मौर्य शासकों के समय धम्म की वजह से कई सारी नकारात्मक प्रवृत्तियों का उदय हुआ।